मैया मैंने दो दो कुल अपनाए

ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए,
तन मन धन सब कर दिया अर्पण वह मेरे ना हो पाए,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए....

एक कुल में मैंने जन्म लिया है,
बीस बरस वहां मैंने बिताऐ,
ऐसे हो गए वह निर्मोही भेज के देश पराए,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाएं....

एक कुल में मैं ब्याह के आई,
सब अनजाने मैंने अपनाए,
तन मन धन से करी है सेवा सबके हुक्म बजाएं,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए.....

बेटी से फिर बहू बनी में,
मां बनकर मैंने लाड लड़ाए,
मेरे मन की कोई सुने ना नैना नीर बहाए,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए.....

मां बाबुल का मान बढ़ाया,
सास ससुर का वंश चलाया,
जब मां मुझको पड़ी जरूरत लगने लगे पराए,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए....

हर बेटी की यही कहानी,
यूं तो है यह सदियों पुरानी,
बहुत तो घर की होती लक्ष्मी कोई क्यों ना लाड लड़ाए,
ओ मैया मैंने दो दो कुल अपनाए.....

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/31505/title/mayia-maine-do-do-kul-apnaye

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |